Subscribe | Past Issues | Translate

View this email in your browser

शिक्षा संस्कार ॐ सहभागिता समरसता

बांसवाड़ा परियोजना

कार्यालय -भारत माता मन्दिर, राती तलाई, बांसवाड़ा (राज.) 327001

फेक्स : 02962-240018, फोन नं. 02962-240018, मो. नं. 9414101912, 9414102261

Email : bharatmatamandirnyas@gmail.com ◆ Website : www.banswarapariyojana.com

माह - फरवरी 2019 (भाद्रपद-अश्विन) युगाब्द-5120-5121 वि.सं.-2075-2076 अंक - 006

पूर्वांचल विशेषांक

धर्म के आधार पर पूर्वोत्तर राज्यों का गठन

चर्च की विश्व को ईसाईकरण करने की महत्वाकांक्षा के क्रियान्वयन के लिये ईसाई मिशनरीज ने ब्रिटिश राज के समय 19 वीं सदी में ही भारत की हिन्दू जनजाति बाहुल्य क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर छद्म सेवा के नाम पर धर्मांतरण का कार्य प्रारंभ दिया था, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र (उस समय का संयुक्त आसाम प्रांत) में भी नागा, मिजो, खासी,और गारो इत्यादि हिन्दू जनजातियों को चिन्हित कर उनकी गरीबी और अशिक्षा का लाभ उठा कर छलकपट एवम् प्रलोभन द्वारा धर्मान्तरण किया जाने लगा था,स्थानीय हिन्दू समाज एवं संतों के विरोध करने पर उनको प्रताडित किया जाता और किसी भी झूठे आरोप मे जेल में डाल दिया जाता और इस प्रकार पूर्वांचल में रहने वाली हिन्दू जनजातियों में ब्रिटिश सत्ता का भय फैलाकर ईसाई मिशनरी द्वारा तेज गति से बड़ी संख्या में उनका धर्मान्तरण किया गया,और जब धर्मान्तरित ईसाईयों की संख्या निर्णायक होने पर चर्च के इशारे पर इन धर्मान्तरित ईसाईयों ने योजनापूर्वक हिंसात्मक कार्यवाही (उग्रवाद) के बल पर अपने लिये अलग राज्यों (ईसाई) की मांग की गई, परिणामस्वरूप चर्च पोषित उग्रवाद से सम्पूर्ण पूर्वांचल ग्रसित हो गया, और अंततः उस समय का संयुक्त आसाम प्रांत चर्च के षडयंत्र के कारण धर्म आधारित जनसंख्या (ईसाई) के आधार पर छोटे छोटे राज्यों में विभाजित होता गया है । बर्ष 1963 में नागा (धर्मान्तरित ईसाई) बाहुल्य क्षेत्र नागालैण्ड राज्य बन गया, जिसकी वर्तमान जनसंख्या मात्र 20 लाख है,और जिसमें ईसाईयों की जनसंख्या 98% है। फरवरी 1987 में मिजो (धर्मान्तरित ईसाई) बाहुल्य लुशाई हिल क्षेत्र मिजोराम राज्य बना , जिसकी वर्तमान जनसंख्या मात्र 11 लाख है, जिसमें ईसाईयों की जनसंख्या 97% है। जनवरी 1972मेंहखासी और गारो जनजाति (धर्मान्तरित ईसाई) बाहुल्य खासी हिल्स एवम् जयन्तिया हिल्स का क्षेत्र मेघालय राज्य बना, जिसकी वर्तमान जनसंख्या 32 लाख है,जिसमें ईसाईयों की जनसंख्या 75 % है। इन राज्यों की सरकार चर्च के इशारे चलती है। मणिपुर में बर्ष 1961 में ईसाई जनसंख्या 19% थी जो बर्ष 2011 मे बढकर 41% हो गई (22% वृद्धि),अरूणाचल में भी बर्ष 1961 में ईसाई जनसंख्या 18.50 % थी जो बर्ष 2011 में बढ कर 30% हो गई (11.50% वृद्धि), और हिन्दू जनसंख्या 34.60% से घटकर 29.00% रह गई है। बंगलादेश से करोडो की संख्या में अवैध घुसपैठ कर आई मुस्लिम जनसँख्या आज आसाम ही नही पूरे देश की संप्रभुता

मिजोराम,नागालेण्ड,मेघालय की तरह ही ईसाई /मुस्लिम बाहुल्य हो जायेंगे और तब पूर्वांचल से एक अलग देश की आवाज उठेगी और देश एक और विभाजन की कगार पर खडा होगा ।

हिन्दू धर्म के एक व्यक्ति का जब धर्म परिवर्तन होता है,तो हिन्दूओं की एक संख्या कम होती है और एक देशद्रोही की संख्या बढ़ जाती है।
।। स्वामी विवेकानन्द ।।

बांसवाडा परियोजना का कार्यक्षेत्र

उपरोक्त वर्णित परिस्थितियों में बांसवाडा परियोजना ने पूर्वांचल मे त्रिपुरा राज्य, मिजोराम राज्य, मेघालय राज्य, और असम के कछार , करीमगंज एवं हैलाकांडी जिलों (बराक वैली क्षेत्र) को कार्य क्षेत्र निर्धारित किया गया है।

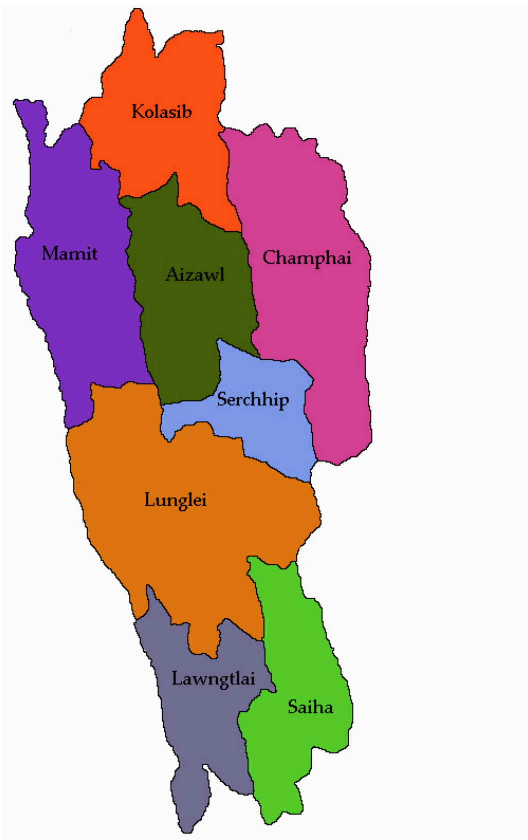

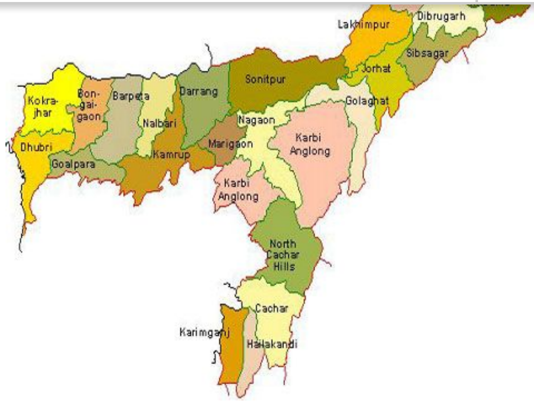

मिजोरम ,त्रिपुरा , मेघालय और असम (कछार, करीमगंज एवं हैलाकांडी जिले)

हिन्दू जनजाति रियांग (ब्रू) शरणार्थी शिविर में

मिजोरम राज्य में मिजो (ईसाई) 97% हैं, शेष चकमा (बौद्ध) और हिन्दू जनजाति ब्रू (रियांग) हैं। मिजोराम में चकमाओं के लिये स्वायत्त जिला है परन्तु जब हिन्दू जनजाति ब्रू (रियांग) ने बर्ष 1996 में अपने लिये स्वायत्त जिले की मांग की तो चर्च पोषित मिजो (ईसाई) संगठन यंग मिजो एसोसिएशन (Y.M.A.) और ब्रू नेशनल लिबरेशन फ्रंट (B.N.L.F) के बीच संघर्ष हुआ,अल्पसंख्यक ब्रू समाज (रियाग) के लोगों के घर जलाये गये, कई ब्रू लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा , चर्च ने अघोषित फरमान जारी कर दिया कि अगर ब्रू (रियांग) लोगों को मिजोराम में रहना है तो ईसाई बन जाये अन्यथा मिजोराम से चले जायें, परिणामस्वरूप रियांग जनजाति के लोग अपनी जान बचाकर अपनी दुकान ,मकान, और ,नौकरी छोडकर त्रिपुरा में आ गये, और तब से 50000 हजार से अधिक रियांग (ब्रू) समुदाय के लोग त्रिपुरा के कंचनपुर अनुमण्डल के नैसिंगपारा, शांतिपारा, आशापाडा सहित 6 शरणार्थी शिविरों मे रहने को मजबूर है, इनके बच्चों की पढाई छूट गई ,इन लोगों के राशन पानी की व्यबस्था त्रिपुरा सरकार करती है जिसके लिये केन्द्र सरकार उसे सहायता देती है।

उत्तर त्रिपुरा के विस्थापित शिविर। प्रवास पर आने वाले सभी कार्यकर्ता इन्हीं विस्थापित शिविरों में रहने वाले कार्यकर्ताओं के साथ ही रूकते हैं ।

ईश्वर इच्छा से पूर्वांचल में बांसवाडा परियोजना का कार्य प्रारंभ हुआ।

मिजोरम से बर्ष 1997 में अपनी जान बचाकर भाग कर आये रियांग जनजाति के लोग मजबूरी में विगत 21 बर्षो से त्रिपुरा के शरणार्थी शिविरों मे रह रहे हैं, परिणामस्वरूप उनके बच्चों की पढ़ाई छूट गई तब उन्होंने अपने बच्चों के भविष्य के लिये स्वयंसेवी संस्थाओं व हिन्दू समाज के व्यक्तियों से सम्पर्क किया और उनसे अपने बच्चों की पढ़ाई के लिये सहयोग करने के लिये कहा ,ऐसे ही प्रयासों के कारण बर्ष 2003 में आशापारा और शांतिपारा (त्रिपुरा) के शरणार्थी शिविरों मे रह रहे रियांग जनजाति (ब्रू) के 14 बालक/बालिकाएं पढने के लिये बांसवाडा

रहे बच्चों के लिये छोटे छोटे विद्यालय चलाने के लिये कहा,और यह ईश्वर इच्छा ही थी कि सहज बातचीत में से मिली प्रेरणा से उन बालकों ने बर्ष 2006 में बांसवाडा परियोजना की सहायता से आशापारा, शांतिपारा के शरणार्थी शिविरों में छोटी कक्षाओं के विद्यालय और बाल संस्कार केन्द्र प्रारम्भ कर दिये, और फिर इन विद्यालयों और इन कार्यकर्ताओं को सम्भालने के लिये बर्ष 2006 से ही बांसवाडा परियोजना के प्रमुख कार्यकर्ता त्रिपुरा जाने लगे और वहां पर वे बांसबाडा से पढ कर गये विद्यार्थियों के घरों (शरणार्थी शिविरों) में ही रुकते थे इससे उनके परिवारों व रिश्तेदारों से आत्मीयता के सम्बद्ध बनते गये,और धीरे धीरे शरणार्थी शिविरों में और आसपास के गांवों में बांसवाडा परियोजना के बारे में सम्मान के साथ चर्चा होने लगी परिणामस्वरूप शरणार्थी शिविरों में रह रहे रियांग जनजाति के बालक/बालिकाओं के अलावा त्रिपुरा ,मिजोराम व आसाम में रहने वाले रियांग , हालम , देबबर्मा,त्रिपुरी और चकमा (बौद्ध) समाज के बालक /बालिकाओं का पढ़ने के लिये बांसवाडा परियोजना में आने का क्रम शुरू हो गया जो आज तक भी जारी है। अभी तक बांसवाडा परियोजना (बांसवाडा) में रहकर लगभग 350 से अधिक छात्र/छात्रायें 12वीं, ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट तक की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं। बांसवाडा से पढकर गये युवकों और स्थानीय शिक्षित युवकों के माध्यम से आज त्रिपुरा के पांच जिलों में और आसाम व मिजोराम के एक-एक जिलें में बांसवाडा परियोजना के सहयोग से विद्यालय,संस्कार केन्द्र चल रहे है, 375 गांवों तक सम्पर्क है।

उत्तर त्रिपुरा के शरणार्थी शिविरों में चल रहे विद्यालय।

रुईद्रक (मारफरा के पास) जिला मोमित मिजोराम में निर्माणाधीन विद्यालय भवन
एवं
चेला गाँग, अमरपुर विद्यालय के भैय्या बहिन

गणतंत्र दिवस समारोह ,करमसोरा आवासीय विद्यालय

कलाईन छारा (कछार, असम) का विद्यालय , इस विद्यालय तक पहुँचाने के लिए इस नदी में 3-4 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है

वर्तमान कार्य वृत्

बांसवाडा परियोजना बांसवाडा (राजस्थान) के सहयोग से पूर्वोत्तर राज्यों में जनकल्याण सेवा न्यास अगरतला (त्रिपुरा) के माध्यम से निम्न प्रकल्प चल रहे हैं ।

1.कुल कार्ययुक्त जिले:- 7

त्रिपुरा - 5 जिले

(उत्तर त्रिपुरा, दक्षिण त्रिपुरा, उन्नकोटि,धोलाई व गोमती)

आसाम - 1 (कछार जिला)

मिजोराम -1 (मोमित जिला)

2.विद्यालय:- 8

त्रिपुरा- आशापारा 3,शांतिपारा 1, (उत्तर त्रिपुरा)

करमसरा 1 (धलाई जिला)

चेलागांग(अमरपुर) 1 (गोमती जिला)

3.संस्कार केन्द्र:- कुल 91 (त्रिपुरा, आसाम, मिजोराम)
4.पूर्णकालिक कार्यकर्ता:- 35
5.टीचर्स :- 133
6.छात्र/छात्रायें 3500 (लगभग)
7.लाभान्वित ग्राम 375

क्षेत्र में चलनेवाले संस्कार केंद्र

संगठनात्मक गतिविधियां

1.बांसवाडा परियोजना द्वारा संचालित सभी गतिविधियां समाज के सहयोग से चलती है, जिसमें अधिकतम सहयोग स्थानीय स्तर पर जुटाया जाता है, किसी भी प्रकार का सरकारी सहयोग नहीं लेते है।

2.क्षेत्र मे चल रहे विद्यालयों,संस्कार केन्द्रों ,सांस्कृतिक एवम् धार्मिक गतिविधियों की सम्भाल के लिये पूर्णकालिक कार्यकर्ता सतत् क्षेत्र मे प्रवास करते है,इन सभी की दो दिवसीय बैठक महीने के पहले सप्ताह मे होती है,जिसमें चल रहे कार्यो की समीक्षा और कार्य विस्तार आदि बिषयों पर गहन चर्चा की जाती है।

आवासीय विद्यालय करमसरा , जिला -धलाई, त्रिपुरा में पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की दो दिवसीय बैठक
एवं
दो दिवसीय मासिक बैठक में भोजन करते हुए पूर्णकालिक प्रवासी कार्यकर्ता

धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियां

प्रत्येक गांव में एक मंदिर हो इस योजना के क्रियान्वयन के लिये पूर्णकालिक प्रवासी कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर ग्रामवासियो से बातचीत करते हैं,और उनको गांव में एक सार्वजनिक पूजास्थल बनाने के लिये कहते है, गांव वाले मंदिर (सामान्यतया बांस का) बनाते है और उन कार्यकर्ताओं के माध्यम से जयपुर (राजस्थान) में निर्मित 19'×15'×12' इंच के शिवलिंग उपलब्ध करवाये जाते हैं। अभी तक 31 शिवमन्दिर और 1 गंगामाता का मंदिर का निर्माण त्रिपुरा के 6 जिलो के 22 गांवों मे हो चुका है।

एक गाँव एक मंदिर में स्थापित मंदिर

शांतिकाली आश्रम (त्रिपुरा) में श्री निखिल जी प्रांत प्रचारक, श्री रामस्वरूप जी महाराज (अ. भा. सहमंत्री वी. हि. प.) श्री सुरेश उपाध्याय (मंत्री,बांसवाडा परियोजना)
एवं
हालम बस्ती में सरस्वती पूजा शोभा यात्रा

सिलाई केन्द्र

अगरतला (त्रिपुरा) की दो बस्तियों मे दो सिलाई केन्द्र चलते है,जहां पर 12 महिलायें सिलाई सीख रही हैं ।

अगरतला की सेवा बस्ती में चल रहे सिलाई केंद्र पर श्री निखिल जी (त्रिपुरा प्रांत प्रचारक) श्री सपनदेव(पूर्वांचल प्रभारी, बांसवाडा परियोजना) श्री सुरेश उपाध्याय (मंत्री,बांसवाडा परियोजना) श्री उल्हास जी कुलकर्णी (क्षेत्र प्रचारक)

संस्कृति दीक्षा यज्ञ

पूर्णकालिक प्रवासी कार्यकर्ताओं के माध्यम से समय समय पर गांव के मंदिर में संस्कृति दीक्षा यज्ञ के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, अभी तक 959 परिवारों के 4308 सदस्य संस्कृति दीक्षा यज्ञ में भाग ले चुके है।

कार्यालय निर्माण

पूर्वोत्तर राज्यों में बांसवाडा परियोजना के बढते कार्यो को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये अगरतला में कार्यालय की आवश्यकता महसूस हो रही थी,अतः अगरतला (त्रिपुरा) में 32× 86 वर्गफीट क्षेत्रफल का एक भू खण्ड क्रय किया है,समाज के सहयोग से शीघ्र ही कार्यालय भवन का निर्माण शुरू करने की योजना है

अगरतला (त्रिपुरा) में बांसवाडा परियोजना का प्रस्तावित कार्यालय भवन

*Copyright © *BANSWARA PARIYOJANA* , All rights reserved.*

Subscribe | Past Issues | Translate ▼

BHARATMATAMANDIRNYAS@GMAIL.COM

Want to change how you receive these emails?
You can update your preferences or unsubscribe from this list.

This email was sent to <<Email Address>>
why did I get this? unsubscribe from this list update subscription preferences
Bharat mata mandir · Bharat mata mandir · rati talai · Delhi, 110009 · India

INTUIT mailchimp